

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान गणेश नमः ॥

श्री गणेश आरती

Ganesh Aarti — संपूर्ण पावन आरती पद, सरल हिंदी भावार्थ एवं विधि सहित

रचयिता: परंपरागत ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण पावन आरती पद (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

टेक

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

भावार्थ: हे विघ्नहर्ता, मंगलकारी भगवान श्री गणेश! आपकी सदा ही जय हो, जय हो, जय हो। जिनकी ममतामयी माता साक्षात् आदिशक्ति पार्वती हैं और परम कृपालु पिता देवाधिदेव महादेव शिवशंकर हैं, उन प्रथम पूज्य देव गणेश जी की हम बारंबार वंदना करते हैं।

पद १

एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

भावार्थ: हे दया के सागर प्रभु! आपका एकदंत स्वरूप अलौकिक है और आप अपनी चारों भुजाओं में पाश, अंकुश, मोदक और अभय-मुद्रा धारण किए हुए हैं। आपके सुंदर ललाट पर दिव्य लाल सिंदूर सुशोभित है और नन्हा मूषक (चूहा) आपका पावन वाहन है। हे माँ पार्वती व भगवान शिव के प्रिय सुत, आपकी सदा जय हो।

पद २

पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

भावार्थ: आपकी पावन पूजा में तांबूल (पान), सुगंधित पुष्प और नाना प्रकार के सूखे मेवे श्रद्धापूर्वक अर्पित किए जाते हैं। आपको अत्यंत प्रिय मोदक और मोतीचूर के लड्डुओं का भोग लगाया जाता है, तथा समस्त साधु, संत और भक्तजन भावविभोर होकर आपकी सेवा में लीन रहते हैं।

पद ३

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

भावार्थ: आपकी कृपा अपरंपार है—आप दृष्टिहीनों को दिव्य ज्योति (नेत्र) प्रदान करते हैं, व्याधिग्रस्त रोगियों को निरोगी व सुंदर काया देते हैं, संतानहीन माताओं को सुयोग्य संतान का वरदान देते हैं और निर्धनों की दरिद्रता हरकर उन्हें सुख, समृद्धि व धन-वैभव प्रदान करते हैं।

पद ४

'सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा।
दीनन की लाज राखो, शम्भु सुत वारी॥
कामना को पूर्ण करो, जाऊँ बलिहारी।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

भावार्थ: भक्तजन (कवि सूरश्याम के भाव में) दीनभाव से आपकी शरण में आए हैं, हे प्रभु हमारी इस तुच्छ पूजा-अर्चना को स्वीकार कर सफल कीजिए। हे शंभु-पुत्र! हम असहायों और दीनों की लाज रखिए तथा हमारे सभी सात्विक मनोरथों को पूर्ण कीजिए; हम आपके इस करुणामयी मंगल स्वरूप पर बारंबार बलिहारी जाते हैं।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **पवित्रता एवं समय:** प्रातःकाल सूर्योदय के समय अथवा सायंकाल गोधूलि वेला में स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र (पीले या लाल रंग के वस्त्र विशेष शुभ) धारण करें। बुधवार और संकष्टी चतुर्थी पर आरती का विशेष महत्व है।
- **आरती की थाली की तैयारी:** तांबे, पीतल या चांदी की थाली में शुद्ध गाय के घी का दीपक या शुद्ध भीमसेनी कर्पूर स्थापित करें। थाली में रोली, अक्षत, सुगंधित पुष्प और गणेश जी की अतिप्रिय **दूर्वा (दूब घास)** अवश्य रखें।
- **तुलसी दल का निषेध:** यह शास्त्रीय नियम सदैव स्मरण रखें कि भगवान गणेश की पूजा, भोग या आरती में कभी भी **तुलसी पत्र** अर्पित न करें।
- **आरती घुमाने का विधान:** आरती की थाली को भगवान गणेश के चरणों में चार बार, नाभि मंडल के सम्मुख दो बार, मुखारविंद के सामने एक बार तथा संपूर्ण दिव्य विग्रह के समक्ष सात बार घड़ी की सुई की दिशा (Clockwise) में भावपूर्वक घुमाएं।
- **भोग एवं समर्पण:** आरती संपन्न होने के पश्चात मोदक, मोतीचूर के लड्डू या ऋतुफल का भोग लगाएं। इसके उपरांत दोनों हाथों से आरती ग्रहण करें और सभी उपस्थित जनों में प्रसाद वितरित करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त कार्यों की निर्विघ्न सिद्धि:** *"एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी"* — गजानन की कृपा से जीवन की कठिन से कठिन बाधाएं, कानूनी अड़चनें और व्यापारिक रुकावटें समाप्त हो जाती हैं।
- **आरोग्य एवं शारीरिक व्याधियों से मुक्ति:** *"अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया"* — नित्य आरती के श्रवण और गान से मानसिक तनाव दूर होता है और असाध्य रोगों में चमत्कारी स्वास्थ्य लाभ मिलता है।
- **संतान सुख एवं पारिवारिक कल्याण:** *"बाँझन को पुत्र देत"* — संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वाले दंपतियों के लिए गणेश जी की नित्य आरती और मोदक भोग अत्यंत कल्याणकारी सिद्ध होता है।
- **अक्षय धन, वैभव एवं दरिद्रता-नाश:** *"निर्धन को माया"* — घर और कार्यस्थल में नित्य आरती होने से माँ लक्ष्मी और रिद्धि-सिद्धि का स्थायी वास होता है तथा दरिद्रता का समूल नाश होता है।
- **समस्त मनोरथों की पूर्ति एवं ईश्वरीय कृपा:** *"कामना को पूर्ण करो, जाऊँ बलिहारी"* — भक्त के समस्त सात्विक संकल्प पूर्ण होते हैं और परिवार में शांति, सौहार्द्र तथा प्रेम का वातावरण बना रहता है।